अध्यापक द्वारा छात्रों को आवश्यक निर्देशन

(1) भ्रमण पर जाने से पहले समस्त छात्रों की रुचि सरस्वती-भ्रमण के प्रति जाग्रत करनी चाहिए।

(2) अध्यापक द्वारा बालकों को निम्न प्रकार के आवश्यक निर्देश दिये जाने चाहिए—

(अ) जिस स्थान का भ्रमण किया जाय, उसकी स्थिति का ज्ञान।

(ब) जाने की तिथि व जाने और वापस आने का समय।

(स) आवागमन के साधन व खर्चा।

(द) मध्याह्न-काल के भोजन का प्रबन्ध।

(3) सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यक बातों का विचार-विमर्श शाला छोड़ने से पूर्व ही कर लेना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(4) अध्यापक को बालकों से अनुशासन के बारे में विचार-विमर्श कर लेना चाहिए।

(5) अध्यापक और बालक को देखने योग्य स्थान की सूची बना लेनी चाहिए। बालकों को कुछ प्रश्न भी निश्चित कर लेने चाहिए जिनके उत्तर वे अध्यापक से चाहते हों।

(6) बालक निरीक्षण के समय अधिक लिख नहीं पाते हैं। अत: उनको जो कुछ भी बताया जाय, उसको अधिक-से-अधिक स्मरण रखना चाहिए।

(7) अगर कोई प्रदर्शक साथ लिया गया है तो बच्चों को उसके साथ ही रखना चाहिए। इससे जो कुछ भी प्रदर्शक बालकों को बतायेगा, उसको सब-के-सब सुन सकेंगे। इसके लिए प्रदर्शक को निम्न बातें ध्यान में रखनी चाहिए—

(अ) उसको काफी जोर से और स्पष्ट रूप से बोलना चाहिए।

(ब) उसको स्पष्ट भाषा प्रयोग में लानी चाहिए।

सरस्वती-भ्रमण से वापस आने के बाद कार्य

भ्रमण से वापस आने के बाद भी बालकों को काफी कार्य करना शेष रह जाता है। बालकों ने जो कुछ भी देखा व सीखा है, उसके बारे में वाद-विवाद होना चाहिए। जो बालकों को स्पष्ट नहीं हो सका है, उसको विचार-विमर्श में प्रश्नों द्वारा हल करने की सुविधा बालकों को दी जानी चाहिए। अध्यापक का मार्गदर्शन आवश्यक है।

सरस्वती-भ्रमण से वापस आने के बाद एक सूक्ष्म सूचना की तैयारी करनी चाहिए। यह सूचना सामूहिक या व्यक्तिगत और लिखित या मौखिक रूप में हो सकती है। उस सूचना तथा ज्ञान से अन्य कक्षाओं के बालक भी सरस्वती-भ्रमण को प्रेरित किये जा सकते हैं।

सरस्वती-भ्रमण से वापस आने पर उनकी निरीक्षण-शक्ति के मूल्यांकन की जाँच करनी चाहिए। यह जाँच निबन्धात्मक परीक्षा-प्रणाली से या उद्देश्यात्मक परीक्षा-प्रणाली से हो सकती है।

Scanned with CamScanner

चाहे जिस प्रकार की भौगोलिक यात्रा व्यवस्थित की जाय, निम्नांकित महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान अवश्य रखा जाय—

(अ) छात्रों को जाने की पूर्व सूचना होनी चाहिए और उन्हें क्या करना है, उसकी विशेष प्रकार से सूचना होनी चाहिए। यदि आवश्यक समझा जाय तो पहले ही योजना और समय-विभाग-चक्र भी बना लेना चाहिए। छात्रों को जो आवश्यक और महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ देखनी हैं, इसकी योजना पहले से बना लेनी चाहिए।

(ब) अध्ययन की जाने वाली वस्तु के लिए तैयार करने वाले पाठों को पहले से ही लेना चाहिए, ताकि समय का अपव्यय न हो।

(स) आवश्यक प्रबन्ध; जैसे—आने-जाने की सुविधा के कार्य, भोजन आदि की व्यवस्था पहले से ही कर ली जाय।

(द) निरीक्षण के बाद प्राप्त सूचनाओं और अनुभव के आधार पर पुनरावृत्ति का पाठ हो जाना चाहिए ताकि छात्र भौगोलिक यात्रा में प्राप्त ज्ञान को क्रमबद्ध कर सकें।

(य) पाठ्य-विषयों में से किसी ऐसे विषय के लाभ के लिए कोई सहायक कार्य कराया जा सकता है जो यात्रा के कार्य से सम्बन्धित हो और वह यात्रा के उद्योगों में जोड़ा जा सकता है।

(र) यदि स्कूल के पास कोई कैमरा क्लब रहा हो तो फोटोग्राफी के कार्यों को भूगोल से सम्बन्धित कराया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(ल) अन्त में अभिभावकों का सहयोग प्राप्त करना आवश्यक है ताकि छात्र बिना हिचकिचाहट भौगोलिक यात्राओं के लिए जा सकें।

इस प्रकार भौगोलिक यात्राएँ स्कूल के बच्चों के लिए वस्तुओं को अपनी वास्तविक स्थिति में अनुभूति करने के लिए आवश्यक कार्य है, परन्तु उनके पूर्ण लाभ को प्राप्त करने में कुछ कठिनाइयाँ भी सामने आती हैं; जैसे—

(1) एक यात्रा के लिए कुछ निश्चित तथा पर्याप्त समय की आवश्यकता पड़ती है और पाठ्यक्रम समय के अन्दर समाप्त नहीं हो पाता।

(2) स्कूल की तथा साथ ही अभिभावकों को कुछ आर्थिक कठिनाइयाँ होती हैं और ऐसी यात्राओं में किसी छात्र को जाने से रोकना अथवा वंचित करना अनुचित तथा अगणतन्त्रीय होता है।

(3) यात्रा का व्यय स्कूल-समिति द्वारा दिया जाना चाहिए। यदि यह कार्य सभी छात्रों के लिए सम्भव न हो तो कम-से-कम उन छात्रों के लिए अवश्य होना चाहिए जो अपने अभिभावकों से रुपया प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

(4) इसके अतिरिक्त अभिभावक अपने बच्चों को ऐसी यात्राओं में नहीं भेजना चाहते, क्योंकि उनके युगों में ऐसी शिक्षण-विधियाँ नहीं थीं। इसके लिए अभिभावकों के अति निकट सम्पर्क में आकर तथा उन्हें विश्वास दिलाकर और यात्रा के लाभों को समझाकर इस समस्या को हल करना चाहिए।

(5) किसी नवीन स्थान में जाकर कभी-कभी किसी छात्र को बीमारी पकड़ लेती है या चोट लग जाती है, किन्तु ऐसे हानिकारक स्थानों से बचते रहना चाहिए।

(6) अध्यापक सम्बन्धी कठिनाइयाँ होती हैं, जो पुराने होने के कारण इस विधि को जानते ही नहीं, क्योंकि स्वयं उन्होंने इस विधि की शिक्षा नहीं पायी है और इस प्रकार इन यात्राओं की आवश्यकताओं का उन्हें कम अनुभव होता है।

(7) इन यात्राओं द्वारा छात्रों की प्रवृत्ति भी घुमक्कड़ हो सकती है। निरीक्षण में व्यक्तिगत रुचि और सुझाव की मात्रा बढ़ जाती है।

(8) कभी-कभी कक्षाएँ बहुत बड़ी होती हैं और यात्रा में उनका नियन्त्रण कठिन होता है।

(9) सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि प्रगति बड़ी मन्दी होती है। इस विधि द्वारा बहुत कम भूगोल पढ़ाया जा सकता है।

परन्तु भौगोलिक अध्ययन में इन यात्राओं की सुविधाएँ असुविधाओं की अपेक्षा बहुत अधिक हैं। सामुदायिक गुण; जैसे—सहयोग, लेन-देन की भावना, सामूहिक भावना, पारस्परिक सहानुभूति की भावना आदि का उचित विकास होता है। आत्म-निर्भरता के महत्त्व का अच्छा अनुभव होता है, जबकि बच्चा अपने अभिभावकों की छत्रछाया कुछ दिनों के लिए छोड़ता है, उसमें स्वतन्त्र-चिन्तन तथा अपने पैरों पर खड़े होने की भावना का विकास होता है।

यहाँ तक यात्रा की व्यवस्था और प्रबन्ध का प्रश्न है, तत्सम्बन्धी अध्यापक छात्रों की सुविधा और देखभाल का ध्यान रखेगा। अध्यापक को ध्यान रखना होगा कि पार्टी में संगीतज्ञ, फोटोग्राफर, अच्छा वक्ता, एक कवि और एक प्रत्युत्पन्नमति का व्यक्ति अवश्य हो। जब ऐसी टोली ट्रिप में जाती है तो किसी अप्रत्याशित कठिनाई की सम्भावना नहीं रहती और पढ़ना तथा हँसना साथ-साथ चलते रहते हैं।

Scanned with CamScanner

निरीक्षण काल में कोई भी वस्तु बिना देखे नहीं छोड़नी चाहिए। छात्रों को अपनी देखी वस्तु का लेखा रखने की रुचि होनी चाहिए। स्थानीय औद्योगिक कार्यों का भी समय-समय पर निरीक्षण होना चाहिए।

इस विधि द्वारा छात्रों को वस्तुओं का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। भ्रमण में निम्नांकित बातों पर ध्यान देना चाहिए—

(1) खेत में जाकर फसलों का निरीक्षण, पौधों का उगना, सिंचाई की विधियाँ आदि।

(2) किसी ऊँचे टीले से गिरते हुए पानी की प्रक्रियाएँ—समतल भूमि पर पानी का मन्द बहाव, मिट्टी जमना, डेल्टा बनना।

(3) कुएँ खोदते समय विभिन्न प्रकार की मिट्टी का निकालना।

(4) जलवायु सम्बन्धी क्रियाएँ—ऋतुओं का परिवर्तन, वायु का चलना, वर्षा, बादल, कोहरा, ओस आदि का पड़ना।

(5) सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्रमा की कलाएँ, ध्रुव तथा अन्य तारे, धूप-घड़ी, सूर्य की ऊँचाई आदि। इनके अतिरिक्त आस-पास में बहुत-सी दृश्य और द्रष्टव्य वस्तुएँ मिलेंगी जिनका निरीक्षण किया जा सकता है।

(6) निवासियों के उद्यम, जो भिन्न प्रकार के हो सकते हैं, पशुपालन, कृषि तथा औद्योगिक कार्यों में वर्ग मजदूर।

पशुपालन, कृषि तथा औद्योगीकरण (Industrialization) आदि का विश्लेषण तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के उद्यम करने वाले लोगों में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध। इस प्रकार के अध्ययन से अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकसित होने की अधिक सम्भावना रहती है।

क्या ही अच्छा हो कि कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई व दिल्ली के बड़े नगरों के छात्रों को पर्वतीय प्रदेशों तथा गंगा के उन्नत कृषि प्रदेशों में लाया जाय तथा कृषि प्रदेशों तथा ग्राम्य निवासी छात्रों को विशाल नगरों में ले जाया जाय। औद्योगिक तथा कृषि प्रदेश के छात्रों का ज्ञान एक-दूसरे का पूरक हो सकेगा। दृष्टिकोण में व्यापकता, उदारता तथा अन्योन्याश्रय की भावना उत्पन्न होगी।

Scanned with CamScanner